हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [ ] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2 / 30 July

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 146 1/2 टिप्पणी (Remarks): उत्तम प्रयास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: 10 × 5 = 50

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत दोहा कबीरदास जी द्वारा रचित 'कबीर ग्रंथावली' से लिया है।

व्याख्या ⇒ कबीरदास जी कहते है कि जैसे जिस प्रकार दीपक में बाती डाल दी जाती है और उसमें तेल भरने के पश्चात उससे प्रकाश उत्पन्न होता है। उसी प्रकार मैंने ईश्वर की प्राप्ति के लिए पूरा प्रयत्न कर लिया किंतु मुझे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए और जब मुझे 'गुरु' मिले और उन्होंने मुझे ज्ञान दिया, तो मैं उनके बताए पथ पर चलता रहा और गुरु के

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परिवाह मार्ग पर चलने का परिणाम है कि मुझे ईश्वर की प्राप्ति हो गई।

विशेष →

(क) इस दोहे में गुरु की महिमा का वर्णन किया गया है।

(ख) वर्तमान में भी गुरु की प्रासंगिकता विद्यमान है। वर्तमान में भी गुरु को ही राष्ट्र निर्माता के रूप देखा जाता है।

(ग) अवधी भाषा का सफल प्रयोग देखने को मिलते हैं। शैली बोधगम्य है।

9/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीतसार' से लिया गया है।

व्याख्या ⇒ सूरदास की गोपियाँ कहती हैं कि प्रकृति का प्रत्येक व्यक्ति के साथ सहचर्य है। गोपियाँ कहती हैं कि कुत्ते की पूंछ को कितना भी प्रयास किया जाए, किंतु सीधा नहीं कर सकते हैं। उसी प्रकार कौआ कभी मांस का भक्षण करना नहीं छोड़ता। इसी प्रकार ~~क~~ धोने के पश्चात भी काला रंग नहीं छूटता। उसी प्रकार गोपियां कहती हैं, उनका कृष्ण के प्रति प्रेम है, जो किसी भी परिस्थिति में

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाप्त नहीं हो सकता है। कोई हमें कितना भी समझा ले हमारा प्रेम कृष्ण के प्रति हमेशा विद्यमान रहेगा।

विशेष → (क) इस पद्यखण्ड में गोपियों के विरह का मार्मिक ~~की~~ वर्णन किया है।
(ख) सूरदास ने उपमा शैली का प्रयोग किया है।
(ग) गोपियों के प्रेम की एकनिष्ठता प्रदर्शित हो रही है।
(घ) ब्रज भाषा का माधुर्य अद्वितीय है।

Gud 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलंका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' नामक रचना से लिया गया है। इसमें नागमती के विरह का वर्णन किया गया है।

व्याख्या ⇒ नागमती अपने पति रत्नसेन के वियोग में व्याकुल है। नागमती कहती है कि विरह के कारण मेरी ऐसी स्थिति है कि जैसे जेठ मास में लू चलती है, इससे गर्मी का एहसास होता है, उसी प्रकार मुझे भी एहसास हो रहा है। बवंडर अर्थात आंधी तूफान आने के कारण भूस्खलन होता है। इसी का प्रकार ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी ने मेरे शरीर में आग लगा दी हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पवन चारों ओर भाग के बढ़ा रही है। विरह की आग से कालिंदी नदी भी सूख गई है। आंधी के कारण आग और भड़क रही है। मेरा विरह में शरीर सूख गया है। मेरी स्थिति विरह में भूखे कौंच जैसी है। कौआ मेरा मांस खा रहा और मेरे शरीर में केवल हड्डियां ही रह गई है। नागमती कहती है मेरी ऐसी स्थिति हो गई है, कम से कम अब तो मेरे प्रिय वापस आ जाओ।

विशेष → नागमती के विरह का वृहद वर्णन है।

(ख) अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है।

(ग) बारहमासा विरह वर्णन शैली का प्रयोग है।

(घ) वर्तमान युग में भी ऐसे एकनिष्ठ प्रेम की प्रासंगिकता विद्यमान है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' से लिया गया है। इसमें किसानों, वनिकों इत्यादि की आर्थिक दशा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या ⇒ तुलसीदास जी कहते हैं प्रत्येक व्यक्ति अपने पेट को भरने के लिए कार्य करते हैं। किसान किसानी करता है। भिखारी अपना पेट भरने के लिए भीख मांगता है। दास, नट, चोर सभी पेट की भूख मिटाने के लिए ही ~~तरह~~ प्रयत्न करते हैं। पेट की भूख मिटाने के लिए ही व्यक्ति अपने बेटा-बेटी तक को बेच देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष → (क) तुलसीदास ने मध्यकालीन दौर की आर्थिक दशा का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है।

(ख) व्यक्ति भूख के आगे संवेदनहीन हो जाता है। यह भी इसमें दर्शाया गया है।

(ग) अवधी भाषा का माधुर्य अद्वितीय है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुरानि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड सूरदास द्वारा रचित सूरसागर के 'भ्रमरगीतसार' खण्ड से लिया गया है। इसमें गोपियाँ उद्धव के योग मार्ग का परिहास कर रही है।

व्याख्या ⇒ गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव हमें निर्गुण गुण अर्थात योग मार्ग पर चलने को प्रेरित कर रहे हैं। यह तो ऐसा ही है, जैसे कोई बंजारा व्यापारी अपने खराब माल को बेचने के लिए चला आया हो। हमें कृष्ण से प्रेम है। गोपियाँ भौंरा के माध्यम से उद्धव से कहती है कि हम पहले ही कृष्ण को स्वीकार कर चुके हैं। ऐसे में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योग को कैसे स्वीकार करें। यह तो एक म्यान में दो तलवार रखने जैसा है। जैसे दूध पीने के बाद भूख समाप्त हो जाती है उसी प्रकार वैसे ही हमें यदि कृष्ण के दर्शन हो जाएं, तो हमारी भूख समाप्त हो जाए। तुम क्यों चोर की भांति दूध में पानी जैसा कार्य कर रहे हो। हमारे मन में पहले से ही कृष्ण विद्यमान है और योग मार्ग के लिए इसमें कोई स्थान नहीं है।

विशेष ⇒ (क) सूरदास ने गोपियों के विरह का अद्वितीय वर्णन किया है।
(ख) इसमें गोपियों ने अपने कथनों के वक्रता के माध्यम से प्रस्तुत किया।
(ग) ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग किया है।

6/10 Gm

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की काव्य भाषा को लेकर हिंदी आलोचकों में विवाद की स्थिति रहती है। जहाँ शुक्ल जी ने 'कबीर की भाषा को काव्योचित माना है', तो वहीं द्विवेदी जी ने कबीर को 'भाषा का डिक्टेटर' कहा है।
किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले आवश्यक है कि कबीर की भाषा का विवेचन किया जाए।

कबीर की भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता उसका प्रसंगों के अनुकूल होना है। जब वह नाथ पंथियों के संबंध रचनाएँ करते हैं, तो उसमें अक्खड़ता आ जाती है, जब सूफियों से संबंधित रचना करते हैं, तो उसमें भावनात्मकता प्रबल हो जाती है, तो वहीं जब वह पंडितों को डाँटते हैं, तो फारसी एवं उर्दू के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शब्द मिश्रित हो जाते हैं और जब पण्डों को डाटते हैं, तो उसमें तत्सम शब्दावली का प्रयोग अधिक होता है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-
"मैं, तो कूता राम का,
मुतिया मेरा नाम।"

वस्तुतः यहाँ उन्होंने कुत्ता के लिए 'मुतिया' शब्द का प्रयोग किया है, जो कि अद्वितीय है। द्विवेदी जी ने कहा भी है - "मुतिया शब्द का प्रयोग होते ही, कुत्ते की सारी दुरूहता दुम हिलाती हुई बाहर आ जाती है।"

कबीर जब भावनात्मक रहस्यवाद से संबंधित रचनाएँ करते हैं, जो वह ~~बोर~~ शृंगारिक कवियों - सूरदास और बिहारी जैसे रचनाकारों को भी टक्कर देते हैं। उदाहरण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : -011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के लिए -

"तलफै बिनु बालम मोर जिया
दिन नहीं चैन, रात नहीं निंदिया
तलफ - तलफ कै भोर किया।"

वैसे कबीर अपनी बात को सीधे कहना चाहते थे, इसीलिए उनकी रचनाओं में प्रतीक, अलंकार, बिंब पर्याप्त नहीं मिलते। किंतु फिर भी उनकी रचनाओं में प्रतीक, बिंब, अलंकार सीमित रूप में देखने को मिलते हैं। प्रतीक योजना का एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

'लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल,
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।"

इसी प्रकार उन्होंने शब्दालंकार एवं अर्थालंकार का भी प्रयोग किया है। अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्रष्टव्य है-
"सागर जल सब मसीं करौं, कलम सब बनराई,
कागद सब पृथ्वी करौं, हरी गुण लिखा न जाई।"

इसी प्रकार कबीर के काव्य में बिंब भी देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए -
"जल में कुंभ, कुंभ में जल,
भीतर - बाहर पानी,
फूटा कुंभ, जल - जलहिं समाया,
इहै तथ कहै ग्याती।"

अतः हम कह सकते हैं कि कबीर की भाषा भले ही कुछ सीमाओं जैसे - सधुक्कड़ी भाषा, उलट बासी इत्यादि विद्यमान हों, किंतु फिर भी वह भाषा साहित्यिक प्रतीत होती है।

Good 12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'भ्रमरगीत' में वचन की भाव प्रेरित वक्रता द्वारा प्रेम-प्रसूत अंतर्वृत्तियों का उद्घाटन परम मनोहर है।" इस कथन के संदर्भ में सूर के भ्रमरगीत पर विचार कीजिये। 15

सूरदास ने भ्रमरगीत सार में भाव प्रेरित वक्रता का वर्णन किया है। वस्तुतः कृष्ण गोपियों को लौटने के का आश्वासन देकर मथुरा चले गए, किंतु वह नहीं लौटे और उन्होंने गोपियों को समझाने के लिए उद्धव को भेजा। ऐसे में गोपियाँ अपनी तीव्र भावनाओं को वक्र कथन के माध्यम से व्यक्त करती हैं।

जब उद्धव ने गोपियों को समझाने का प्रयास किया और कहा कि उन्हें कृष्ण को भूल जाना चाहिए, तो गोपियों ने ~~कहा~~ उद्धव से व्यंग्य पूर्वक कहा -

'उर में माखन चोर गड़े, अब कैसहूँ निकसत नाहिं तिरछे ह्वै जो अड़े।'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इसी प्रकार जब उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की उपासना के लिए प्रेरित करते हैं, तो गोपियाँ उद्धव का मजाक उड़ाते हुए कहती हैं —

"आयो ~~घ~~ घोस बड़ो व्यापारी
ज्ञान जोग की गठरी इहं आन उतारी।"

गोपियाँ ~~सुरदास~~ अपनी भावनाओं पर काबू नहीं पा पाती और कृष्ण के वियोग में उद्धव के साथ-साथ मधुप तक को बुरा-भला कहती है —

"तुम कारे, सुफलत सुत कारे,
कारे भंवर हमारे,
या मधुप काजर की कोठरी,
जे आवत है कारे।"

गोपियाँ उद्धव के निर्गुण ~~क~~ ब्रह्म का उपहास करते हुए ~~हैं~~ कहती

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है - "निर्गुण कौन देश कौ बासी,
को है जनक, जननी को कहियत
कौन नारी को दासी।"

अंततः उद्धव गोपियों के वक्र कथनों से पराजित होकर 'सगुण' को चेरो हो जाते हैं।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि कि सूर ने गोपियों की भाव प्रेरित वक्रता का जैसा वर्णन किया है, वह अद्वितीय है।

9/18

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything except the question number in this space)

(ग) वर्तमान जीवन-संदर्भों में तुलसी की रामराज्य परिकल्पना की सार्थकता पर विचार कीजिए। 15

तुलसी ने रामराज्य की परिकल्पना की है। वस्तुतः तुलसी ने 'कवितावली' में रामराज्य की अनेक विशेषताएँ बताई है।

तुलसी का कहना है कि रामराज्य में किसी भी व्यक्ति के ऊपर कोई कष्ट नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी होंगी। वह कहते हैं- "दैहिक, दैविक, भौतिक तीनों तापा, काहूँ नाहिं व्यापा"

तुलसी रामराज्य में राजा के लिए भी प्रतिमान स्थापित करते है। उनका मानना है कि राजा को जनकल्याणकारी होना चाहिए और उसी के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनका कहना है कि जो भी राजा प्रजा का कल्याण नहीं करेगा, वह निश्चित रूप से नर्क का अधिकारी होगा। उदाहरण के लिए -

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी सोर नर अवश नरक अधिकारी"

~~तुलसी~~ तुलसी स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों की भी बात करते हैं। तुलसी का मानना है कि केवल पत्नी में ही एकनिष्ठता नहीं होना चाहिए बल्कि पति में भी एकनिष्ठता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए -

"एक पत्नीव्रत रत सब झारी ते मन वचन क्रम पति हितकारी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसी रामराज्य में संसाधनों के वितरण को प्राथमिकता देते हैं, जिससे समानता न रहे। रामराज्य में सभी को रोजगार प्राप्त होगा, अकाल की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी और सभी वर्ग समन्वय बनाकर रखेंगे।

अतः स्पष्ट है कि तुलसी के रामराज्य की सार्थकता वर्तमान में भी विद्यमान है।

6/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'रामचरितमानस' के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तुलसीदास की रचना 'रामचरितमानस' के संदर्भ में यह प्रश्न उठता है कि क्या रामचरितमानस को महाकाव्य की श्रेणी में रखना चाहिए या नहीं है।

वस्तुतः महाकाव्य के रूप में रामचरितमानस को स्थापित करने से पहले यह आवश्यक है कि महाकाव्य के आवश्यक कसौटियों पर रामचरितमानस को कसकर देखा जाए। यदि प्राचीन कसौटियों की बात की जाए, तो किसी रचना के महाकाव्य होने के लिए आवश्यक है कि उसमें - धीरोदात्त नायक हो, छंद वैविध्य हो, उदात्त भाव हो, 8 या अधिक सर्ग हो इत्यादि।

यदि प्राचीन कसौटियों पर इसका परखा जाए, तो रामचरितमानस महाकाव्य प्रतीत होती है। वस्तुतः 'मानस' में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

'राम' धीरोदात्त नायक की सभी शर्तें पूरी करते हैं। वह संयमी हैं, शील हैं और उदात्त से परिपूर्ण हैं। मानस में द्वंद्व वैविध्य भी दिखाई देता है, तो साथ ही यह आठ से काण्ड में विभक्त है। इसमें 'वीर रस' जैसा भाव भी विद्यमान है।

यदि आधुनिक कसौटियों जैसे – उदात्त नायक, उदात्त कथानक, उदात्त प्रभाव, उदात्त भाव, उदात्त भाषा शैली इत्यादि पर कसकर देखें, तो भी 'मानस' महाकाव्य प्रतीत होती है।

मानस के नायक राम में धीरोदात्त नायक के सभी गुण हैं। उनमें संयम, शालीनता, और वीरता, तथा कर्तव्यपरायणता जैसे गुण विद्यमान हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मानस' का कथानक भी उदात्त है। वस्तुतः मानस में राम अपने पिता की आज्ञा की पूर्ति के लिए वन जाते हैं और अपनी पत्नी सीता की प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। इसी प्रयत्न से पूरे कथानक का विकास हुआ है।

मानस में वीर एवं शांत रस प्रमुखता से विद्यमान है। वस्तुतः राम - रावण युद्ध में राम ने वीरता का परिचय दिया है। ऐसे में यह उदात्त भाव की कसौटी पर भी खरी उतरती है।

मानस 'उदात्त प्रभाव' की दृष्टि से भी सफल है। दरअसल मानस से भारतीय में पारिवारिक मर्यादा कर्तव्य परायणता, पितृ भक्ति जैसे गुणों का संचार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ
(Please do not write anything except the question number in this space)

होता है।

मानस की भाषा-शैली भी उदात्त है। वस्तुतः मानस में अवधी का प्रयोग मिलता है, तो साथ ही, लोकोक्तियों, मुहावरों, बिंब इत्यादि भी देखने को मिलते हैं।

अतः हम ~~कहेंगे~~ कह सकते हैं कि रामचरितमानस 'महाकाव्य' होने की सभी कसौटियां पूरी करती है अतः इसे महाकाव्य की श्रेणी में रखना ही उचित है।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर की भक्ति-भावना के स्वरूप पर प्रकाश डालिये।

15

कबीर की भक्ति भावना में विविध रूप देखने को मिलते हैं। कबीर किसी एक दर्शन या एक आलंबन तक नहीं रहे बल्कि उन्होंने अपनी भक्ति को व्यापक रूप दिया।

कबीर ~~की~~ प्रारंभ में नाथपंथी थे और वह योग साधना पर बल देते हैं। तो साथ ही कबीर ने नाथ पंथियों के साधनात्मक रहस्यवाद को अपनाते हुए योग पर बल दिया।

कबीर निर्गुण भक्ति के उपासक थे। कबीर ने रामानंद से राम का नाम लेकर राम की निर्गुण भक्ति प्रारंभ की। इसीलिए कबीर ने कहा है -

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना
राम नाम मरम है आना।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन ऐसा नहीं है कि उन्होंने केवल निर्गुण भक्ति को ही प्राथमिकता दी ~~था~~ हो, बल्कि उन्होंने सगुण भक्ति का भी कई जगह उल्लेख किया है और सगुण - निर्गुण के भेद को मिटा दिया। कबीर कहते हैं -

"निरगुण में गुण, गुण में निरगुण"

कबीर की भक्ति पर सूफियों का भी प्रभाव दिखता है। वह ईश्वर ~~के~~ से एक हो जाने को जाने को तड़प रहे हैं और इसी कारण उनमें भावनात्मकता का चरम दिखाई पड़ता है। उदाहरण के लिए -

"तलफै बिनु बालम मोर जिया,
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया,
तलफ - तलफ कै भोर किया।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कबीर की भक्ति में निर्गुण, सगुण, सूफियों सभी का प्रभाव समाविष्ट रहा है।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है, क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास की रचना भ्रमरगीतसार के संबंध में कहा जाता है कि "उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं।" दरअसल कोई भी रचना अपने काल तक ही सीमित नहीं होती बल्कि वह अपने काल का अतिक्रमण कर प्रत्येक काल में प्रासंगिक बनी रहती है।

यदि सूरदास की रचना का विश्लेषण करें, तो उसमें उमर कथन के संबंध में कुछ प्रतीक मिलते हैं। जैसे वर्तमान में वही व्यक्ति लोकतंत्र में चुनाव में निर्वाचित हो पाता है, जो कि जनता के बीच लोकप्रिय होता है। कृष्ण के संबंध में यह सही प्रतीत होता है क्योंकि वह जनता के बीच लोकप्रिय हैं, इसलिए वे राजा बन पाए। क्यों

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान में नेता कुछ बार निर्वाचित होने के पश्चात राजधानी में ही निवास करने लगते हैं और क्षेत्र में कभी-कभार ही दिखते हैं। और लंबे अंतराल के बाद जब नेता की अनुपस्थिति के कारण जनता में आक्रोश पनपने लगता है, तो नेता किसी बिचौलिये नेता को जनता को समझाने के लिए भेजता है और कुछ जनकल्याणकारी घोषणाएँ करता है।

सूरदास के कृष्ण भी राजा बन गए हैं और उनकी अनुपस्थिति में गोपियाँ बिरह से पीड़ित हैं, ऐसे में कृष्ण अपने मित्र उद्धव को बिचौलिये नेता के रूप में गोपियों के बीच भेजा, जिससे वह गोपियों को निर्गुण उपासना की अग्रसर कर सकें।

यह व्याख्या एक सीमा के पश्चात उचित प्रतीत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं होती, क्योंकि एक ले
कृष्ण स्वेच्छा से मथुरा के
शासक नहीं बने, तो साथ
ही वह मथुरा में वह
किसी भोग - विलास में लिप्त
नहीं है। और उन्होंने उद्धव
को इसलिए सेवा, विसे वे
निर्गुण ब्रह्म की अपेक्षा सगुण
ब्रह्म की आराधना करें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहीं नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

2

व्याख्या → कभी - कभी व्यक्ति को जिज्ञासु होना आवश्यक होता है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक प्रश्न का उत्तर जाने बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि कि वह प्रत्येक प्रश्न को समझने का प्रयास करे और उसके समाधान का प्रयास करे। इसी प्रकार व्यक्ति को जिज्ञासु बनकर ही जीवन जीना चाहिए।

विशेष → (क) व्यक्ति में जिज्ञासा की उपस्थिति को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अनिवार्य तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है।

(ख) जीवन जीने के लिए जिज्ञासा की आवश्यकता को सिद्ध किया गया है।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग किया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यखण्ड हिंदी नाट्येतिहास के महान रचनाकार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक 'स्कन्दगुप्त' से लिया गया है।

व्याख्या ⇒ इसमें 'स्कंदगुप्त' का नायक स्कंदगुप्त अपने जीवन में शांति चाहता है। उसका मानना है कि उसे उसी प्रकार शांति चाहिए जैसे बौद्धों को निर्वाण प्राप्त करते समय प्राप्त होती है, योगियों को योग करते हुए और जैसे पागल सब कुछ भूल जाते हैं, वैसी ही वह भी विस्मृति चाहता है। स्कंदगुप्त के मन में द्वंद्व की स्थिति है वह कहता है कहता है कि कि कोई है और उसे वह राजा है कि जैसे प्रतीत होता है। कि वह खिलौना भगवान उसके साथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खिलौने की भाँति खेल रहा है। स्कंदगुप्त को राजा के का मुकुट भी तुच्छ प्रतीत हो रहा। वस्तुतः वह जीवन में आनंद प्राप्त करना चाहता है।

विशेष ⇒ (क) प्रसाद जी का आनंदवादी दर्शन स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है।

(ख) सूत्र शैली - 'बौद्धों का निर्वाण' का प्रयोग किया गया है।

(ग) भाषा तत्समी होते हुए भी बोधगम्य है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गाँव की भीड़ बड़ी हुलसकर देख रही है यह सब दृश्य। दा साहब के इस बड़प्पन के आगे सभी नतमस्तक हो आए हैं। बड़े-बूढ़ों को तो शबरी और निषाद की कथाएँ याद हो आईं। किसी-किसी को ईर्ष्या भी हो रही है हीरा से। बेटे तो जाने कितनों के मरते हैं–पर ऐसा मान?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यखण्ड मन्नु भण्डारी द्वारा रचित 'महाभोज' नामक उपयान्स से लिया गया है।

व्याख्या ⇒ बिसु की मौत के बाद जब गांव का माहौल तनावपूर्ण रहता है। ऐसे में राज्य के मुख्यमंत्री 'दा साहब' गांव में आते हैं और वे बिसु के पिता को अपने साथ अपनी गाड़ी में बैठा लेते हैं। ~~इसी~~ यह दृश्य देखकर गांव को रामचरितमानस का प्रसंग आ गया, जिसमें राम ने शबरी और निषाद को अपने सखा तुल्य बताया था। कुछ ग्रामीण तो इससे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ईर्ष्या तक करने लगते हैं।

विशेष ⇒ (क) भण्डारी जी ने राजनीतिक विद्रूपताओं को उभारा है।

(ख) भाषा सरल एवं सहज है।

(ग) प्राचीन कथाओं 'शबरी और निषाद की कथा' को माध्यम बनाकर वर्तमान का वर्णन किया है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिये था उससे दूर हट आया हूँ। जब भी मेरी आँखें दूर तक फैली क्षितिज रेखा पर पड़तीं, तभी यह अनुभूति मुझे सालती कि मैं उस विशाल से दूर हट आया हूँ।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत गद्यखण्ड नवलेखन दौर के रचनाकार मोहन राकेश द्वारा रचित 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

व्याख्या ⇒ कालिदास जब गांव छोड़कर उज्जैन चला गया, तो वह अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए कहता है कि वह सत्ता एवं ऐश्वर्य के लोभ में गांव को छोड़कर उज्जैन आ गया और एक अप्रामाणिक जीवन जी रहा है। वह इस बात से दुखी है कि वह शहर में रहकर न तो रचनाकर्म का पा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रहा है और इसी का परिणाम है कि वह अपने जीवन से दूर होता जा रहा है।

विशेष ⇒ (क) अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

(ख) सर्जना एवं सत्ता के द्वंद को उभारा है।

(ग) भाषा सहज, सरल, एवं प्रवाहपूर्ण है।

(घ) वर्तमान में भी राजनेता जनता को तात्कालिक राहत प्रदान उनसे वोट प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। विजयी होने के पश्चात जनता का ध्यान नहीं देते।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान से कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यखंड आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'श्रद्धा और भक्ति' नामक निबंध से लिया गया है।

व्याख्या → शुक्ल जी कहते हैं कि भारत में ऐसे लोगों का महत्व नहीं है, जो केवल उपदेश देकर समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं बल्कि सम्मान ऐसे लोगों का है, जो समाज में रहकर समाज सुधार के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। भारतीय परंपरा में ईश्वर उन्हें ही माना गया, जो अवतार लेकर समाज एवं मानव जाति के कल्याण के लिए कार्य करते हैं। राम और कृष्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दोनों ने ही समाज सुधार के लिए कार्य किया है।

विशेष ⇒ (क) व्यक्ति के प्रयत्नों पर बल दिया गया है।

(ख) वर्तमान में समाज कल्याण के लिए उपदेश नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के प्रयत्नशील होने की आवश्यकता है।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

10/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद दर्शन के अध्येयता रहे हैं। उन्हें सभी दर्शनों का ज्ञान था। उनकी सभी रचनाओं, कामायनी, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी में दर्शन स्पष्ट रूप से नजर आता है। स्कंदगुप्त नाटक में भी अनेक दर्शन विद्यमान है।

स्कंदगुप्त नाटक में मुख्यः 'आनंदवादी' दर्शन नजर आता है। आनंदवादी दर्शन में ज्ञान, इच्छा क्रिया में समरसता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और चरित आनंद की स्थिति में पहुंच जाता है, जहाँ उसे किसी प्रकार की इच्छा नहीं रहती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त का "। बौद्धों जैसी शांति और योगियो जैसी समाधि।" की कल्पना आनंद की प्राप्ति को भी दर्शाती है।

स्कंदगुप्त में 'नव्य वेदांत' दर्शन भी नजर आता है। नव्य वेदांत दर्शन के टैगोर, गांधी इत्यादि के विचारों से भी देखने को मिलता है। नव्य वेदांत दर्शन में माना जाता है कि "कण-कण में ईश्वर विद्यमान है।" देवसेना कहती है - "प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है। पत्ती के प्रत्येक कंपन में एक ताल।"

स्कंदगुप्त में बौद्ध दर्शन का भी प्रभाव देखने को मिलता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बौद्ध दर्शन सृष्टि को परिवर्तनशील मानता है। प्रख्यातकीर्ति का कथन "सृष्टि जड़ नहीं चलायमान है" बौद्ध दर्शन का प्रभाव स्पष्ट करता है।

स्कंदगुप्त में 'कामाध्यात्मवाद' का भी प्रभाव नजर आता है, जिसमें 'काम' एवं आध्यात्मक को आपस में घोल दिया गया है। विजया जहां 'कामचेतना' का प्रतिनिधित्व करती है वहीं देवसेना आध्यात्मिक प्रेम का।

स्कंदगुप्त में सीमित अर्थ में मार्क्सवाद का भी प्रभाव नजर आता है। वस्तुतः 1917 में रूसी क्रांति हुई थी और मार्क्सवाद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का प्रभाव पूरे देश में फैल रखा था। ऐसे में प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक में भी मार्क्सवाद का प्रभाव नजर आता है। पर्णदत्त कहता है- "अन्न पर स्वत्व भूखों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का।"

अतः स्पष्ट है कि स्कंदगुप्त में मुख्यतः 'आनंदवादी' दर्शन विद्यमान है। किंतु नव्य वेदांत, मार्क्सवाद, बौद्ध दर्शन इत्यादि दर्शन भी विद्यमान है।

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question -number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव की विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश का महत्वपूर्ण नाटक है। वस्तुतः मोहन राकेश सार्त्र के अस्तित्ववादी दर्शन से प्रभावित थे। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि उनकी रचना 'आषाढ़ का एक दिन' में अस्तित्ववादी दर्शन नजर आए।

अस्तित्ववादी दर्शन में 'व्यक्तित्व का विखण्डन' नजर आता है। वस्तुतः व्यक्ति अपने मत को निर्णय न कर किसी बाहरी दबाव में निर्णय करता है, जिससे उसको अकेलापन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ~~कुछ~~ कालिदास 'अभाव की प्रतिक्रिया' में गांव छोड़कर उज्जैन रचनाकर्म

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करने चला गया। वस्तुतः उसका मन गाव में रमता है, किंतु वह सत्ता भी प्राप्त करना चाहता है। इसी का ~~~~ परिणाम है कि वह अजनबीपन, अकेलापन का शिकार होता है। उदाहरण के लिए -

"तुम्हारा मुझे न पहचानना ही उचित है, क्योंकि मैं वह नहीं जिसे तुम पहचानती हो।"

अस्तित्ववाद में ~~~~ 'विसंगतिबोध' एक बड़ी समस्या है। वस्तुतः व्यक्ति विसंगतिबोध में 'वह क्या है?' और उसे 'क्या होना चाहिए?' इसी द्वंद्व में लगा रहता है। कालीदास विसंगतिबोध से पीड़ित है। कालीदास रचनारत करना चाहता है किंतु साथ ही उसे सत्ता, ऐश्वर्य से

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

भी लगाव है। ऐसे में वह उसी द्वंद में लगा रहता है और अंतत: एक 'अप्रामाणिक' जीवन जीने को अभिशप्त होता है।

अस्तित्ववादी दृष्टि में चरित्र केवल अच्छे या बुरे नहीं होते बल्कि अच्छे और बुरे हैं। यह विशेषता भी कालिदास और विलोम के चरित्र में देखने को मिलती है।

अत: स्पष्ट है कि मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' अस्तित्ववादी दृष्टि पर आधारित है।

6/15

Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भारत - दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चंद्र का महत्वपूर्ण नाटक है। वस्तुतः हरिश्चंद्र भारतीयों में नवजागरणवादी चेतना जाग्रत करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नाटक लेखन को महत्व दिया और नाटकों को भी ~~अप~~ मंचन के अनुकूल लिखा, जिससे इनका सफलतापूर्वक मंचन किया जा सके।

भारत- दुर्दशा का 'दृश्य विधान' सरल है। भारत-दुर्दशा में 6 दृश्य एवं 6 अंक है। इन दृश्यों का मंचन ~~भी~~ आसान है। प्रथम दृश्य में भारत दुर्दशा को दर्शाया गया है। द्वितीय दृश्य में खण्डहर, भौंकते हुए कुत्ते इत्यादि को दिखाया गया है। तीसरे दृश्य में एक विशाल मैदान में सेना के कुछ तंबू लगे हैं और चौथे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृश्य में एक कमरे में एक रेवल और उसके चारों ओर कुर्सियों को दर्शाया गया है। और अंतिम दृश्य में भारत दुर्दशा एक पेड़ के नीचे मूर्छित अवस्था में पड़ा है। इस 4 दृश्यों के मंचन के लिए कुछ पात्रों और कुछ कुर्सियों और कुछ पर्दों की आवश्यकता है।

भारतेंदु ने ध्वनि संकेत भी पर्याप्त मात्रा में दिए। उदाहरण के लिए अंधकार के आने पर सन - सन की आवाज आती है।

भारतेंदु ने 'प्रकाश संकेत' भी दिए हैं। वस्तुतः भारतेंदु के समय में प्रकाश संकेत देने की परंपरा नहीं थी, किंतु उन्होंने प्रकाश संकेत दिए हैं। उदाहरण के लिए - अंधकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के आने पर कुछ दीपक बुझा दिए जायेंगे।

भारतेंदु ने पात्रानुकूल भाषा को भी चुना। जिससे मंचन में समस्या नहीं आती। इतना ही नहीं उन्होंने पात्रों की वेश-भूषा का भी वर्णन किया है। जैसे —

"भारत दुर्दैव - आधा ~~किरि~~ किरिस्तानी, आधा मुसलमानी वेश।"

हालाँकि भारतेंदु के नाटक में कुछ कमी भी है। जैसे, इसमें पात्रों की संख्या अधिक है। अश्लीलत्व एवं ग्राम्य दोष ~~सभा~~ के कारण भाषा को समझने में समस्या आती है। किंतु फिर भी भारत-दुर्दशा का मंचन आसान है।

8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation